हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-B-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): विक्रम नागर

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 30/07/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	4	2	3	8	3	2

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): (B)

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 98

टिप्पणी (Remarks): लिखे गए उत्तर अच्छे हैं। पूरा प्रश्नपत्र हल करने का प्रयत्न किया करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिए: 10 × 5 = 50

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहना, बहुरि न आँवौं हट्ट।।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल के क्रांतिकारी कवि 'कबीरदास' द्वारा रचित है जो इनके ग्रंथ 'बीजक' में 'गुरुदेव कौ अंग' नामक खण्ड से ली गई हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कबीरदास ने गुरु महिमा का वर्णन किया है तथा गुरु द्वारा किये गये उपकार का भी वर्णन किया है।

व्याख्या - कबीरदास जी कहते हैं कि मुझे गुरु ने ज्ञानरूपी दीपक दिया है जो तेल से परिपूर्ण है अर्थात भरा हुआ है। साथ ही उसने इसमें न घटने वाली बत्ती भी डाल दी है। जिससे मैं ज्ञान से ओत-प्रोत हो गया हूं तथा मैंने अपना धर्म रूपी व्यापार को पूरा कर लिया है तथा अब दोबारा इस बाजार में नहीं आऊंगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

- इन पंक्तियों में सद्गुरु की महिमा का वर्णन किया गया है वास्तव में कबीर पर यह प्रभाव नाथों का तथा वैष्णवों का है।

- कबीरदास ने गुरु को ईश्वर से भी अधिक महत्व दिया है -

  "गुरु गोविंद दोऊ खड़े का के लागौं पाये,
  बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो मिलाय।"

- इन पंक्तियों की भाषा सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी है।

- छंद के स्तर पर यह दोहा छंद है। इस छोटे से दोहे में गुरु की पूरी महिमा का बखान करना कबीर जैसे कवियों का ही प्रताप हो सकता है।

- दीपक, बाती जैसे शब्दों के प्रयोग में दृश्य बिम्ब भी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जेठ जरै जग बहै लुवारा। उठै बवंडर धिकै पहारा।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा। लंका डाह करै तन लागा।
चारिहुँ पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी।
दहि भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि मँदी।
उठै आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ मरौं दुख बाँधी।
उधजर भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग होइ भूखा।
माँसु खाइ अव हाड़न्ह लागा। अबहूँ आउ आवत सुनि भागा।
परबत समुंद मेघ ससि दिनअर सहि न सकहिं यह आगि।
मुहमद सती सराहिअै जरै जो अस पिय लागि।।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यावतरण भक्तिकालीन सूफी काव्यधारा के शिरोमणि मलिक मुहम्मद जायसी के कालजयी ग्रंथ 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खंड' से ली गई हैं।

प्रसंग- राजा रत्नसेन के वियोग में नागमती की विरह दशा का मार्मिक वर्णन किया गया है।

व्याख्या- कवि नागमती की विरह दशा एवं उसके आस-पास की स्थिति का वर्णन करते हुए कहता है कि जेठ के महीने में आग बह रही है, बवंडर की आंधी उठ रही है। ऐसे ही विरह की अग्नि नागमती को परेशान कर रही है। तन को तड़पा रही है। चारों ओर से पवन आग ला रही है जो अत्यन्त पीड़ाकारी है, यमुना नदी भी दही बन गई है। विरह की अग्नि ऐसी ही होती है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चारों ओर से आग उठ रही है तथा आँखों से कुछ भी नहीं दिख रहा है। नागमती का सारा मांस समाप्त हो गया है, तन सूख गया है। विरह की अग्नि का प्रभाव ही कुछ ऐसा होता है। यह ऐसी अग्नि है जिसे पर्वत, समुद्र, मेघ, चंद्रमा कोई नहीं सह सकता। ऐसे में अपने प्रिय के लिए सती होने वाली स्त्री ही समझ सकती है।

विशेष -

- नागमती का वियोग वर्णन इतना मार्मिक है कि यह हिंदी साहित्य का 'अद्वितीय' विरह वर्णन बन गया है।
- यहां पर प्रकृति भी सम्मिलित है तथा प्रकृति के विभिन्न घटक जैसे - पवन, अग्नि, चंद्रमा, मेघ को भी कविता में स्थान दिया गया है।
- यह विरह का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है जो ऊहात्मक भी लगने लगता है।
- इसमें 'अवधी' भाषा का प्रयोग किया गया है जो अपने ठेठ रूप में है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आए जोग सिखावन पाँड़े।
परमारथी पुराननि लादे ज्यों बनजारे टाँड़े।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखैं ते राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायँगे एक म्यान दो खाँड़े।।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है हाथि के संग गाँड़े।
काकी भूख गई बयारि भखि बिना दूध घृत भाँड़े।।
काहे को झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँड़े।
सूरदास तीनों नहिं उपजत धनिया धान कुम्हाँड़े।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश भक्तिकालीन कृष्ण भक्ति धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि 'सूरदास' के ग्रंथ 'सूरसागर' से लिया गया है।

प्रसंग - सूर की गोपियाँ उद्धव से उनके योग व ज्ञान के बारे में प्रश्न कर रही हैं तथा व्यंग्यों के माध्यम से उनका कटाक्ष भी।

व्याख्या - सूरदास ने इन पंक्तियों में बड़ा ही सुंदर तरीके से गोपियों के पक्ष को रखा है। गोपियाँ कहती हैं आप हमें योग सिखाने आये हैं और आप (उद्धव जी) पर' पोथी पत्रा लादे हुए बंजारे की भाँति खड़े हो। हमारी गति तो समझते नहीं, जो हम तो अपने प्रियतम को दिल में बिठाये हैं। भला आप ही बतायें एक म्यान में दो तलवारें कैसे रह सकती हैं? आप ही भ्रमर बताये कि भला कभी बिना खाये भी भूख चली गई है कभी क्यों आप उल्टी सीधी बातें हमको पढ़ा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रहे हो। कहीं तुम चोर तो नहीं हो। सूरदास जी कहते हैं बिना उपचार किये तो धनिया, धान, कुम्हड़े तीनों ही नहीं उपजते हैं।

विशेष -

— सूर की गोपियां ने जो 'वक्र कथन शैली' में अपने भाव व्यक्त किये उनके भाव संप्रेषण सुंदर बन पड़े है।

— गोपियों ने अन्यत्र भी ऐसे ही वक्र कथन कहे हैं जब वो उद्धव के निर्गुण ब्रह्म का उपहास उड़ाती है -

निर्गुण कौन देस को वासी
को है जनक, जननी को कहियत कौन नारि को दासी।"

— सूर की भाषा 'ब्रज भाषा' है जो कृष्णभक्ति को नये क्षितिज पर ले जाती है।

— सूर के पद गेय पद हैं जिनको श्रीनाथ के मंदिरो में गाया जाता था।

— शब्द शक्ति की दृष्टि से व्यंजना का सुंदर प्रयोग यहां पर किया गया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) कबीर की काव्य-भाषा पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी साहित्य के विवादास्पद प्रसंगों में से एक विवाद कबीर की भाषा को लेकर रहा है। कुछ आलोचक इनकी काव्य भाषा को अकाव्योचित मानते हैं जिनमें आचार्य शुक्ल प्रमुख हैं। तो दूसरी तरफ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे आलोचक कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' तथा 'भाषा के बादशाह' घोषित करते हैं।

कबीरदास जी ने शिल्प पक्षों का वास्तव में उतना ध्यान नहीं रखा तथा भाषा आदि को लेकर भी वह अपनी तरफ से बेपरवाह बने रहे। उनका तो स्पष्ट कहना है 'मसि कागद छुओ नहीं कलम गही नहीं हाथ'।

परंतु ऐसा नहीं है कि उनकी भाषा एकदम दोयम दर्जे की हो। उनकी नाथ परम्परा से संबंधित उक्तियाँ, उलटबासी से संबंधित कविताएं भले भाषा के स्तर पर गतिहीन हो परंतु भक्ति एवं सामाजिक चेतना की कविताएं भाषा की दृष्टि से महान हैं।

कबीर की भाषा की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(1) प्रसंगानुकूल शब्दों का चयन - उदाहरण के लिए
"मैं तो कूता राम का, 'मुतिया' मेरो नाम"। इसमें मुतिया शब्द बड़ा ही जानदार है जिसकी द्विवेदी जी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

(2) उनकी व्यंग्य क्षमता - इसने तो कबीर की वाणी को ऐसी धार दी है कि सामने वाला नतमस्तक होने के अलावा कुछ नहीं कर पाता उदा०

"जो तू बाम्हन बाम्हनी का जाया
आन बाट ह्वै क्यूं नहीं आया।"

(3) मुहावरों-लोकोक्तियों का सधा हुआ प्रयोग - इससे उनकी भाषा समाज से जुड़ सकी।

(4) बिम्बों का प्रयोग - यद्यपि कबीर इस शब्द से अपरिचित ही थे परंतु उनके काव्य में दृश्य, स्पर्श, कोमल, संश्लिष्ट बिम्बों की भरमार है। उदा०

बरसा बादल प्रेम का भीग गया सब अंग (स्पर्श बिम्ब)
लाली तेरे लाल की जित देखूं तित लाल (दृश्य)

(5) प्रतीकों की भाषा - कबीरदास ने प्रतीकों का प्रयोग इस तरह से किया कि वह स्वयं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अर्थ को व्यक्त करते लगते हैं। जैसे -

'जल में कुंभ, कुंभ मे जल है बाहर भीतर पानी'

(6) कठोर तथा कोमल भाषा की सम्पन्नता

इस प्रकार कबीरदास की काव्य भाषा बड़ी सक्षम है तथा वह अपने समय में ऐसी भाषा में काव्य रचना कर रहे थे जो आगे आने वाले समय का आधार बनी।

Good 11½/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'भ्रमरगीत' में वचन की भाव प्रेरित वक्रता द्वारा प्रेम-प्रसूत अंतर्वृत्तियों का उद्घाटन परम मनोहर है।" इस कथन के संदर्भ में सूर के भ्रमरगीत पर विचार कीजिये। 15

कविता में वक्रता का प्रयोग दो तरह से होता है - बुद्धि प्रेरित तथा भाव प्रेरित। इनमें से भाव प्रेरित वक्रता कविता के आस्वादन को बढ़ाती है। इसी भाव प्रेरित वक्रता का सुंदर प्रयोग 'भ्रमरगीत' में दिखायी पड़ता है।

भ्रमरगीत में सूर ने गोपियों के माध्यम से भाव प्रेरित वक्रता को मूर्त रूप दिया है विशेषकर जब वह उद्धव की बातों का खंडन करते हुए अपने प्रेम के पक्ष में सबल प्रमाण देती हैं।

इसी क्रम में जब उद्धव गोपियों को ज्ञान का पाठ पढ़ा रहे हैं तो गोपियाँ कहती हैं -

"उर में माखन चोर गड़े,
अब कैसेहुं निकसत नाही तिरछे हु जो अड़े।"

इस कथन के सामने उद्धव निरुत्तर से हो जाते हैं तथा अपनी बातों के पक्ष में कोई बात नहीं कह पाते हैं। इसके साथ ही जब उद्धव गोपियों को निर्गुण ब्रह्म की अच्छाईयां तथा सगुण की बुराईयां

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बताते हैं तो फिर गोपियाँ कटाक्ष करके कहती हैं -

"निर्गुन कौन देस को वासी
को है जनक जननी को कहियत कौन नारि को दासी।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि सूरदास ने भ्रमरगीत में जो भाव प्रेरित वक्रता का प्रयोग किया है वह बेजोड़ है तथा आचार्य शुक्ल ने इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) वर्तमान जीवन-संदर्भों में तुलसी की रामराज्य परिकल्पना की सार्थकता पर विचार कीजिए। 15

भक्तिकालीन कवियों में तुलसीदास ही ऐसे कवि हैं जिन्होंने सभा राजनीति, अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर अपनी लेखनी चलायी है। उन्होंने विनाश के काल को, समस्याओं के काल को कलियुग तथा अपने स्वप्नशील राज्य को 'रामराज्य' कहा है।

'रामराज्य' की कल्पना में तुलसीदास कहते हैं ऐसा राज्य है जहाँ शोषण नहीं है। मिथ्या आलस्य नहीं है, राजा व प्रजा दोनों कर्तव्यनिष्ठ हैं। नारी व पुरुष दोनों समकक्ष हैं। वर्णव्यवस्था का पालन हो रहा है आदि।

यदि हम वर्तमान जीवन-संदर्भों में देखें तो अगर 'रामराज्य' आ जाये तो कई समस्याओं का समाधान हो सकता है जैसे - सर्वप्रथम हमारे भारतीय संविधान में जिस समतामूलक समाज की बात की गई है वह रामराज्य से मिलती-जुलती है तथा शोषणहीन समाज का आदर्श दुआहूत के विवेक में दिखता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इसी प्रकार रामराज्य में सभी स्त्रियों को पुरुषों के समान महत्व प्रदान किया गया है तथा पुरुषों से 'एक नारीव्रत' का पालन करने को कहा गया है जो आज की दृष्टि से अनुकूल है।

परंतु वर्णव्यवस्था का आदर्श तथा राजतंत्र की विद्यमानता पूर्णतया सही नहीं है क्योंकि वर्ण व्यवस्था समाज को विभाजित करने का साधन है तथा इसी और राजतंत्र लोकतंत्र का विरोधी है। परंतु तुलसीदास तो राजतंत्र के अंदर ही लोकतांत्रिक बातों का प्रतिपादन करते हैं।

इस प्रकार आज भी रामराज्य की सार्थकता बनी है ऐसे ही इसका ~~समाज~~ वर्णन तुलसीदास जी ने 500 वर्ष पहले ही ग्रंथ में किया है।

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

6. (क) 'दर्शन में प्रसाद की गहरी अभिरुचि थी जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में घुला दिया है।' इस कथन के आलोक में 'स्कंदगुप्त' नाटक की दार्शनिक भंगिमा पर विचार कीजिये। 20

जयशंकर प्रसाद की जितनी रुचि साहित्य के सर्जन में है उतनी ही दर्शन में। उन्होंने अपने दर्शन को अपनी रचनाओं में घुला दिया है। उन्होंने शंकर के अद्वैतवाद के विरुद्ध शैवाद्वैतवाद का महत्व स्थापित किया जिसे सामरस्यात्मवाद, आनन्दवाद आदि नामों से जानते हैं।

शैवाद्वैतवाद में जगत को महाचिति की लीलामय अभिव्यक्ति माना जाता है तथा इसमें तीन स्थितियों - आणव, शाक्त, शांभव एवं पांच कोषों - प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनंदमय की चर्चा की जाती है। स्कंदगुप्त नाटक पर इनके दर्शन का स्पष्ट प्रभाव है। स्कंदगुप्त के निम्नलिखित कथन से यही बात झलकती है कि स्कंदगुप्त का लक्ष्य आनंद की प्राप्ति है -

"अधिकार सुख कितना मादक व सारहीन है।"

"बौद्धों का निर्वाण, योगियों की सी समाधि, पागलों की विस्मृति मुझे एक साथ चाहिए।"

इन पंक्तियों से स्पष्ट झलकता है कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्कन्दगुप्त की वास्तविक इच्छा क्या है?

इसके अतिरिक्त देवसेना का व्यक्तित्व भी त्याग, बलिदान की प्रतिमूर्ति है तथा वह किसी भी प्रकार से स्कंदगुप्त के मार्ग में बाधा नहीं बनना चाहती और बात-बात पर अपने त्याग का परिचय देती है।

इसके साथ ही उनके समय में जो हिन्दू-मुस्लिम के मध्य सांप्रदायिकता की समस्या थी उसे भी उन्होंने दार्शनिक रूप में हिंदू व बौद्ध संघर्ष के माध्यम से ~~सुल~~ सुलझाने का प्रयास किया है तथा दोनों में सामन्जस्य की बात की है।

प्रसाद पर कामायपालमवाद का भी पूर्ण प्रभाव था जिसे उन्होंने स्कंदगुप्त में विभिन्न पात्रों जैसे विजया, अनंतदेवी, कुमारगुप्त आदि के माध्यम से व्यक्त किया है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि प्रसाद साहित्य के सर्जक व दर्शन के अध्येता

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

थे। इन्होंने जिसका प्रभाव स्कंदगुप्त में स्पष्टता देखा जा सकता है।

और गहराई लाँए
मॉडल उत्तर देखें

9½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक पर अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव की विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आषाढ का एक दिन' नाटक मोहन राकेश का प्रथम नाटक है जिस पर अस्तित्ववादी दर्शन का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

अस्तित्ववाद में मनुष्य को महत्व, उसके व्यक्तित्व पर बल, प्रामाणिक जीवन, स्वतंत्र निर्णय, आत्मनिर्वासन, विसंगतिबोध आदि को सम्मिलित किया जाता है। इन सभी तत्वों का प्रभाव इस नाटक के प्रत्येक पात्र पर देखा जा सकता है। साथ ही नाटक की संरचना भी अस्तित्ववाद से प्रभावित है।

कालिदास का जीवन वास्तव में प्रामाणिकता की खोज तथा सत्ता व सृजन के द्वंद्व के मध्य झूलता हुआ दिखायी पड़ता है। उसका पहला निर्णय, राजकवि का पद स्वीकारना उसके स्वभाव के अनुसार नहीं है। साथ ही जब उसे कश्मीर का राजा बनाया जाता है तो भी वह अपनी नियति के अनुरूप कार्य नहीं कर पाता। उसका यह द्वंद्व उसके निम्नलिखित कथन से स्पष्ट होता है –

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"मैंने सोचा आज नहीं तो कल मैं परिस्थितियों पर अंकुश लगा दूंगा परंतु मैं उसके अनुसार ही कार्य करता और चालित होता रहा।"

इसी प्रकार मल्लिका का जीवन का भी कालिदास के जीवन पर निर्भरता को व्यक्त करता है जो अस्तित्ववाद के अनुसार विसंगति ही है। वह अपने प्रेम को भावना के स्तर पर पाना चाहती है परंतु अंत में उसे वारांगना बनना पड़ता है जो विसंगतिबोध का परिणाम ही है।

साथ ही विलोम का जीवन भी कहीं न कहीं विडम्बनाओं से भरा है। वह कविता भी करता है तथा मल्लिका से प्यार भी। परंतु उसे दोनों नसीब नहीं होते जिसकी छटपटाहट निम्नलिखित कथन में व्यक्त भी होती है -

"कालिदास क्या है? एक सफल विलोम और विलोम क्या है? एक असफल कालिदास।"

विलोम को अंत में मल्लिका मिल जरूर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाती है परंतु शरीर के स्तर पर ही क्योंकि उसकी भावनाओं पर तो कालिदास का ही अधिकार है।

इसके अतिरिक्त मातुल, आदि का जीवन भी विसंगतियों से ही भरा है। वास्तव में इन व्यक्तियों के मन का अंतर्द्वंद्व मध्यवर्गीय मानव का ही अंतर्द्वंद्व है जो तत्कालीन समय में व्यक्ति को आंदोलित कर रहा था।

अन्ततः कहा जा सकता है कि 'आषाढ़ का एक दिन' पर अस्तित्ववाद का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

औ। (बेहतर बात)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भारत-दुर्दशा' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत-दुर्दशा 1875 ई० में लिखित एक लघु नाटक है। अपने लेखन के समय से ही यह नाटक रंगमंचीय उपस्थिति दर्ज कराता रहा है। दर असल इसके लेखक भारतेन्दु जी का नाटक के प्रति दृष्टिकोण उसके सफल मंचन से सम्बन्धित था।

भारत-दुर्दशा में छः अंक तथा 6 दृश्य हैं इसलिए इसका मंचन बेहद आसान है। साथ ही दृश्य योजना, संवाद-योजना, भाषा, चरित्र-योजना आदि के द्वारा हम इसकी रंगमंचीयता का विश्लेषण कर सकते हैं।

दृश्य योजना के अंतर्गत इसके पहले दृश्य में वीथी का दृश्य है। दूसरे दृश्य में एक प्रकार का तथा श्मशान, अंग्रेजी कमरा, वृक्ष के नीचे का दृश्य अन्य दृश्य हैं इन्हें खेलना आसान है।

संवादों की दृष्टि से संवाद गतिशील व चुस्त हैं तथा संवादों में सरलता है जिससे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नाटक का प्रवाह बाधित नहीं हुआ है। परंतु कहीं-कहीं एकालाप एवं स्वगत कथनों के कारण रुकावट अवश्य आयी है।

इस नाटक की सफलता का एक आधार इसकी गीत-योजना में भी निहित है क्योंकि गीतों ने व्यंग्य एवं प्रवाह को गति प्रदान की है। जैसे- पहले अंक का प्रथम गीत भूमिका का कार्य करता है। परंतु कहीं-कहीं इन गीतों के कारण नाटक का आस्वादन बाधित भी हुआ है।

भाषा के स्तर पर पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है तथा मुहावरे-लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा का प्रवाह स्वाभाविक अच्छा है। नये-नये शब्दों का प्रयोग तथा तद्भव शब्दों ने दर्शक को नाटक से जोड़ने में अहम भूमिका निभाई।

भारतीय नाट्य परम्परा में रंग संकेत देने का कार्य प्रायः नहीं हुआ है परंतु भारतेन्दु ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इसका प्रारंभिक तौर पर प्रयोग किया है जैसे- अंधकार के आगमन पर प्रकाश का कम करना, आँधी का गर्जन सुनायी देना आदि।

कुल मिलाकर इनकी रंगमंचीयता की दृष्टि से एकाध कमियों को छोड़कर यह सफल नाटक है।

अच्छा है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'आषाढ़ का एक दिन' शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिये। क्या आप इस नाटक का इससे बेहतर नाम प्रस्तावित कर सकते हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

किसी भी रचना का शीर्षक ऐसा होना चाहिए जिसको पढ़ते ही उसकी संवेदना मस्तिष्क पर अंकित होने लगे। इस दृष्टि से नाटक या रचना का शीर्षक चरित्र प्रधान जैसे- स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, घटना प्रधान या स्थिति प्रधान हो सकता है।

इस दृष्टि से हम विचार करें तो 'आषाढ़ का एक दिन' में कोई स्वतंत्र चरित्र ऐसा नहीं है जिसके नाम के आधार पर नामकरण हो सके। कालिदास नाम रखने पर नाटक का उद्देश्य ही बदल जाता, यदि मल्लिका नाम रखते तो भी पूरी संवेदना व्यक्त न हो पाती। वस्तुतः ये सभी पात्र तो विभिन्न स्थितियों के ही अनुसार चालित हैं इसलिए चरित्र प्रधान नाटक इसका नहीं हो सकता।

इसके अतिरिक्त घटना प्रधान नाम में भी दिक्कत है क्योंकि इसमें कोई ऐसी घटना नहीं है जो इतनी महत्वपूर्ण हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इन सभी बिंदुओं पर विचार करने के बाद इस नाटक का नाम तो स्थिति प्रधान ही हो सकता है। इसी आधार पर 'आषाढ़ का एक दिन' नामकरण हुआ है। क्योंकि यह नाम सुनकर सीधे कथ्य को समझने या व्यक्त करने में इसी तरह तन्मयता उभरती है। साथ ही सभी घटनाएँ भी मेघों के गर्जन, उनका बरसना तथा प्रभाव आदि से प्रभावित दिखती है।

इसलिए कहा जा सकता है कि 'आषाढ़ का एक दिन' का यह नाम ही उपयुक्त है तथा यह नाम इसी तरह से कथ्य एवं संवेदना को व्यक्त भी करता है।

और गहराई लाएं।

9/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में इतिहास और कल्पना के समन्वय पर प्रकाश डालिये। 15

~~आज~~ कोई भी नाटक अपने कथानक को तीन प्रकार से निर्मित करता है - उत्पाद, इतिहास एवं कल्पना तथा इतिहास का मिश्रण से।

'आषाढ़ का एक दिन' में इतिहास एवं कल्पना के समन्वय पर विचार करने से पहले हमको राकेश के दृष्टिकोण को समझना होगा। इस दृष्टि से राकेश का स्पष्ट मत है कि उन्होंने कल्पना इतिहास का उपयोग उपयोगितावादी दृष्टि से किया है तथा कालिदास और व्यक्तियों का प्रयोग प्रभाव क्षमता एवं भावों को बढ़ाने के लिए किया है।

इस नाटक में इतिहास की दृष्टि से केवल ऐतिहासिक वातावरण लिया गया है तथा अधिकांश चरित्र काल्पनिक है एवं समस्याएँ शाश्वत हैं। इस संबंध में प्रमुख चरित्र कालिदास के संबंध में इतिहास सम्मत बातें हैं कि प्रारंभ में उनका मूर्ख होना, वेश्यागामी होना, बाद में एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

राजकुमारी से विवाह तथा महान कवि होना। इसके साथ ही उसके कश्मीर के राजा बनने का ज़िक्र स्कंदगुप्त में भी आया है।

स्थानों की दृष्टि से उज्जयिनी का नाम भर है परंतु पूरा नाटक मल्लिका-अंबिका के घर का ही है। साथ ही मल्लिका जो इस नाटक का केंद्र बिंदु है वह स्वयं ही अनैतिहासिक या काल्पनिक चरित्र है। इसके साथ ही विलोम, मातुल, अंबिका, अनुनासिक, अनुस्वार सभी काल्पनिक हैं।

वास्तव में राकेश ने कल्पना का अधिक प्रयोग इसलिए किया कि वह नाटक को इतिहास बनाने से बचना चाहते थे। साथ ही इतिहास के वातावरण का तत्व इसलिए लिया कि इससे पाठक को ज्यादा जोर नहीं देना पड़ा नाटक के आस्वादन के लिए।

इसलिए इस नाटक में इतिहास एवं कल्पना का अच्छा समावेश किया है जिसमें लेखक सफल भी रहा है।

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) क्या भारत-दुर्दशा को एक त्रासदी माना जा सकता है? तर्कपुष्ट उत्तर दीजिये। 15

भारत-दुर्दशा राष्ट्रीय जागरण की चेतना से ओत-प्रोत नाटक है तथा इस विषय पर पर्याप्त विचार रहा है कि भारत दुर्दशा को त्रासदी माना जाना चाहिए या नहीं।

त्रासदी नाटक अरस्तवी परम्परा में लिखे जाते थे जिनके अंत में नायक की मृत्यु या पराजय से विरेचन का प्रभाव उत्पन्न होता है तथा यह नायक भद्र हो, संघर्ष तीव्र हो एवं एक ही कथा मुख्य हो।

परंतु इन कसौटियों को देखकर भारत-दुर्दशा को त्रासदी नहीं माना जा सकता क्योंकि भारत कोई उदात्त, भद्र, वीर या संयमी नायक नहीं है। वह एक ऊँची आवाज सुनकर ही बेहोश हो जाता है और भारत भाग्य के बहुत जगाने पर होश में नहीं आता तथा इसमें नायक-खलनायक संघर्ष भी नहीं है और कथा कोई तीव्र संघर्षपूर्ण भी नहीं है। इसलिए इसे त्रासदी नहीं माना जा सकता।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूसरी तरफ कुछ लोगों ने भारत की दुर्दशा, उसकी पराजय को देखकर इसे त्रासदी नाटक कहा है। साथ ही यह पराजय कोई इसके व्यक्तित्व की नहीं अपितु भारत जैसे महान व्यक्तित्व की है जो नाटक के अंत में दुखद प्रभाव उत्पन्न करता है।

परंतु यदि हम निरपेक्ष मूल्यांकन करें तो भारत-दुर्दशा में यद्यपि त्रासद प्रभाव है परंतु विरेचन का भाव उत्पन्न नहीं होता। इसलिए इसे त्रासदी नाटक तो नहीं कहा जा सकता है हाँ यह उसके नजदीक अवश्य है।

8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation